NJESR/Janurary 2021/Volume -3/Issue-1 **E-ISSN-2582-5836**
DOI-10.53571/NJESR.2021.3.1.11-15

''उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता पर उनके व्यक्तित्व कारकों के प्रभाव का अध्ययन''

शेर सिंह* डा0 संजय कुमार**

*****शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र), मेरठ कॉलेज, मेरठ

मो0: 9997070748, E-mail: mrtdaksh@gmail.com

******एसो0 प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ

मो0: 9412454519, E-mail: skumar.mcm@gmail.com

(Received: 20 December 2020/Revised: 31 December 2020/ Accepted: 10 January 2021/Published: 20 Janurary 2021)

सारांश– शिक्षा के माध्यम से लोग अधिक जिम्मेदार एवं जागरूक नागरिक बनते हैं और राजनीति में अपनी आवाज उठाते हैं जो एक स्थायी लोकतंत्र के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा गरीबी मिटाने में मदद करती है, लोगों के आर्थिक जीवन एवं उनके बेहतर जीवन यापन को सुधारने में महती भूमिका अदा करती है। शिक्षा के माध्यम से किसी भी समाज के सदस्य अपने कौशलों को विकसित करते हैं एवं समृद्धि, संचरण और सांस्कृतिक विरासत को बदलने के साथ–साथ मौजूदा सामाजिक उन्नति के लिए प्रयास करते हैं। वर्तमान समय में समाज को गतिशील और जीवित बनाने के लिए एक उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है। जैसा कि देखा गया है शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपने व्यक्तित्व का विकास तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित समस्त शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक शक्तियों एवं गुणों का विकास भी करता है। मनुष्य के व्यक्तित्व में उसकी जन्मजात शक्तियाँ एवं अर्जित गुण दोनों आते हैं। इनमें मुख्य रूप से मनुष्य का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, आत्म–चेतना, इच्छाशक्ति, सामंजस्यता, सामाजिकता, विकासोन्मुखता आदि हैं। व्यक्तित्व मनुष्य द्वारा अर्जित की गयी एक विशिष्ट रचना होती है, जिसके द्वारा मनुष्य वातावरण के साथ समायोजन की क्षमता विकसित करता है।

मुख्य शब्द– व्यक्तित्व, सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक शक्ति, जन्मजात शक्ति, विकासोन्मुखता, समायोजन

शिक्षा, मानव समाज या राष्ट्र की वह आधारशिला है जिसके अभाव में प्रगति नहीं की जा सकती। शिक्षा के द्वारा ही मानव जाति का विकास सम्भव है। शिक्षा द्वारा मनुष्य के अन्तः चक्षु खुल जाते हैं। जिससे मानव जाति अन्धकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होती है। शिक्षा द्वारा मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि होती है जो पारस्परिक सम्बन्धों के निर्धारण तथा व्यक्ति के विकास में सहायक है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ आर्थिक परिवर्तन एवं समावेश के लिए शक्तिशाली उपकरण है, जो राष्ट्र के विकास में सहायक है। **मैकाइवर** के अनुसार ''सामाजिक परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव जीवन को विभिन्न दिशाओं में प्रभावित एवं परिवर्तित करता है। परिवर्तन मानव जीवन एवं समाज का नियम है। शिक्षा का कार्य इस प्रगतिशील प्रवृत्ति को बनाये रखना है।'' शिक्षा व्यक्ति के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है और इससे किसी व्यक्ति को वंचित नहीं रखना चाहिए। आज प्रत्येक समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण की दौड़ में शामिल है जो अपनी शैक्षिक प्रणाली को गहन ज्ञान आधारित, सीखने और विशेषज्ञ बनाने हेतु तत्पर है इसलिए वह स्वयं को ज्ञान और कौशल आधारित शिक्षित समाज के रूप में विकसित कर रहा है। शिक्षा प्रणाली राष्ट्र के विकास और उन्नति के लिए एक सकारात्मक मानसिकता का कार्य करती है जो इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक युग में राष्ट्र के वर्चस्व को उसकी आसन्न दौड़ में बनाये रखती है, क्योंकि

भारत एक विकासशील देश है बिना शिक्षा के कोई भी राष्ट्र अपना विकास नहीं कर सकता है। अच्छी शिक्षा योग्य शिक्षकों के द्वारा ही दी जा सकती है। शिक्षक, शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा शिक्षक के बिना कोई भी शिक्षा प्रणाली जीवित नहीं रह सकती।

शोध के उद्देश्य–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को उनके व्यक्तित्व कारकों के आधार पर वर्गीकृत करना।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बहिर्मुखी व्यक्तित्व, उभयमुखी व्यक्तित्व एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता की तुलना करना।

शोध परिकल्पना–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बहिर्मुखी व्यक्तित्व, उभयमुखी व्यक्तित्व एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया है–

उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा मान्यता प्राप्त मेरठ जनपद के कुल 20 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को शोध हेतु चयनित किया गया है। जिसमें कक्षा 11 एवं 12 के शिक्षकों को शोध हेतु न्यादर्श के रूप में लिया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु दो मनोवैज्ञानिक चरों शिक्षण–दक्षता एवं व्यक्तित्व कारक को ही सम्मिलित किया गया है।

शोध प्रक्रिया–

शोध प्रक्रिया सभी क्षेत्रों के अनुसंधानों में लगभग एक जैसी ही होती है, परन्तु शोध प्रविधि भिन्न–भिन्न होती हैं।

शोध विधि–

शोध विधि के माध्यम से शोधकर्त्ता को शोध समस्या चयन से लेकर निष्कर्ष तक की क्रियाओं को पहचानना होता है तथा इन अनुसंधान की क्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से नियोजित करना होता है। वर्तमान उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत शोध में **वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण पद्धति** का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में **सरल यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि** द्वारा **कुल 100 शिक्षक** न्यादर्श के रूप में लिये गये हैं, जो उ0प्र0 सरकार द्वारा अनुदानित उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में शिक्षण कार्य कर रहे हैं। शोध अध्ययन के न्यादर्श का चयन **सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि** के अन्तर्गत **लॉटरी प्रणाली** के माध्यम से किया गया है।

मेरठ जनपद के उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा मान्यता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कुल 86 विद्यालयों में से **सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि** के अन्तर्गत **लॉटरी प्रणाली** के माध्यम से **20 विद्यालयों** को चयनित किया गया तथा चुने गये 20 विद्यालयों में से **गुच्छ यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि** द्वारा **100 शिक्षकों** का चयन अन्तिम न्यादर्श के लिए किया गया है।

उपकरण–

शोधकर्त्ता को अपने शोध अध्ययन के लिए शोध के अनुरूप उपयुक्त उपकरणों का चुनाव करना होता है। शोध उपकरण के चुनाव पर ही शोध अध्ययन की सफलता निर्भर करती है। शोध पत्र हेतु आंकड़े एकत्र करने के लिए निम्नलिखित प्रमापीकृत शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है–

1. पी.एफ. अजीज और डॉ. (श्रीमती) रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित **अंतर्मुखी बहिर्मुखी इन्वेंटरी (आई.ई.आई),**

2. बी.के. पासी और श्रीमती एम.एस. ललिथा द्वारा निर्मित **सामान्य शिक्षण–दक्षता पैमाना (जी.टी.सी.एस.)**

चर–

1. **स्वतंत्र चर–** व्यक्तित्व
2. **आश्रित चर–** शिक्षण–दक्षता

सांख्यिकी विश्लेषण–

प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त आँकड़ों का संकलन करने के पश्चात् निम्नलिखित सांख्यिकी तकनीकों का प्रयोग किया गया– माध्य, मानक विचलन, टी–परीक्षण, एवं एफ–परीक्षण।

शोध में सांख्यिकी गणना हेतु **SPSS** (Statistical Package for Social Sciences) सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है। परीक्षण अर्थात् F–परीक्षण को वर्तमान अध्ययन के आँकड़ों को समझने के लिए लागू किया गया। इस प्रयोजन के लिए प्रयुक्त सूत्र नीचे दिया गया है–

$$F = \frac{\text{बाह्य प्रसरण (समूह}_1\text{) (Among Variance)}}{\text{भीतरी प्रसरण (समूह}_2\text{) (Within Variance)}}$$

स्वतंत्रता की कोटि (Degree of Freedom) = $(N_1\text{-}1) + (N_2\text{-}1)$

उद्देश्य एवं परिकल्पना परीक्षण–

1. **उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को उनके व्यक्तित्व कारकों के आधार पर वर्गीकृत करना।**

सारणी संख्या 1.0

व्यक्तित्व कारक	उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की संख्या (N)	प्रतिशत (%)
बहिर्मुखी	62	62
उभयमुखी	37	37
अन्तर्मुखी	11	11
कुल योग	**100**	**100**

तालिका संख्या 1.0 से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के कुल 100 शिक्षकों में से 62 (62%) बहिर्मुखी व्यक्तित्व, 37 (37%) उभयमुखी व्यक्तित्व एवं 11 (11%) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले शिक्षक पाये गये। अतः यह स्पष्ट है कि शोध न्यादर्श में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सर्वाधिक शिक्षक बहिर्मुखी व्यक्तित्व तथा सबसे कम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले पाये गये।

परिकल्पना H_0–उच्चतर माध्यमिक स्तर के बहिर्मुखी व्यक्तित्व, उभयमुखी व्यक्तित्व एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1.1

विचरण का स्रोत	वर्गों का योग (SS)	स्वतंत्रता की कोटि (df)	वर्गों का माध्य योग (MS)	F	सार्थकता (P-मान)
समूहों के मध्य	993.205	2	496.602		
समूहों के भीतर	17375.705	97	179.131	**2.772**	**.067**
कुल योग	**18368.910**	**99**	**675.733**		

विश्लेषण (ANOVA) -

तालिका संख्या 1.1 के विश्लेषण से प्राप्त P–मान (.067) के लिए df= 2, 97, सार्थकता स्तर 0. 05 से अधिक है। अतः **शून्य परिकल्पना स्वीकृत** की जाती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि **उच्चतर माध्यमिक स्तर के बहिर्मुखी व्यक्तित्व, उभयमुखी व्यक्तित्व एवम् अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं हैं।**

निष्कर्ष–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कुल 100 शिक्षकों में से 62 (62%) बहिर्मुखी व्यक्तित्व, 37 (37%) उभयमुखी व्यक्तित्व एवं 11 (11%) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले शिक्षक पाये गये। अतः यह स्पष्ट है कि शोध न्यादर्श में उच्चतर माध्यमिक स्तर के सर्वाधिक शिक्षक बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले हैं। स्पष्टतः हम कह सकते हैं कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए गये कुल 100 शोध न्यादर्श शिक्षकों में से अधिकांश शिक्षक बहिर्मुखी व्यक्तित्व (62%) तथा सबसे कम अन्तर्मुखी व्यक्तित्व (11%) वाले शिक्षक पाये गये हैं।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले शिक्षकों की शिक्षण–दक्षता में अन्तर नहीं है।

सुझाव–

प्रस्तुत शोध उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज से मान्यता जनपद मेरठ के प्राप्त उच्च्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित है। इसे वृहद् स्तर पर पूरे प्रदेश व अन्य प्रदेशों के शैक्षिक बोर्डों के लिए भी किया जा सकता है। यह अध्ययन विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण संस्थानों जैसे– DIET, CIET एवं विश्वविद्यालयों आदि के शिक्षकों हेतु भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. **सिद्धू के.एस.(1985)** मेथड्स ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, स्टरलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली,
2. **गोविन्द तिवारी (1989)** शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
3. **नायडु पी एस (1992)** शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व प्रथम संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर
4. **शर्मा रामनाथ कुमार राजेन्द्र (1995)** सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसंधान की विधियाँ और प्रविधियाँ एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीक्यूटर्स
5. **भटनागर ए.बी. भटनागर मिनाक्षी, अनुराग, (2003)** एजुकेशनल साइकोलोजी, आरलाल बुक डिपो
6. **वर्मा, जी.एस. (2005)** शिक्षक तकनीकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ
7. **गुप्ता एस.पी. गुप्ता अल्का (2007)** सांख्यिकीय विधियाँ इलाहबाद शाखा पुस्तक भवन।
8. **लोकेश कौल (2010)** शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली
9. **डॉ विपिन अस्थाना (2010–2011)** शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन
10. कैरी, आर.जी. एण्ड जोसेफ ए., 2010. एजूट्रैक, नीलकमल पब्लिकेशन, 9(11),5–8.
11. http://www.brandbharat.com/english/up/districts
12. http://cie.du.ac.in/scholors/med_abst2013_01.pdf
13. http://shodhganga.inflibnet.ac.in
14. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handls/10603/12279
15. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handls/10603/178408
16. http://www.eurojournals.com/ajsr.htm
17. http://hdl.handle.net/10603/72423
18. http://www.indianjournals.com/ijor.aspx